SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

समकालीन भारत - 2

अध्याय - 3

जल संसाधन

भाग - 4

पंकज वैष्णव

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

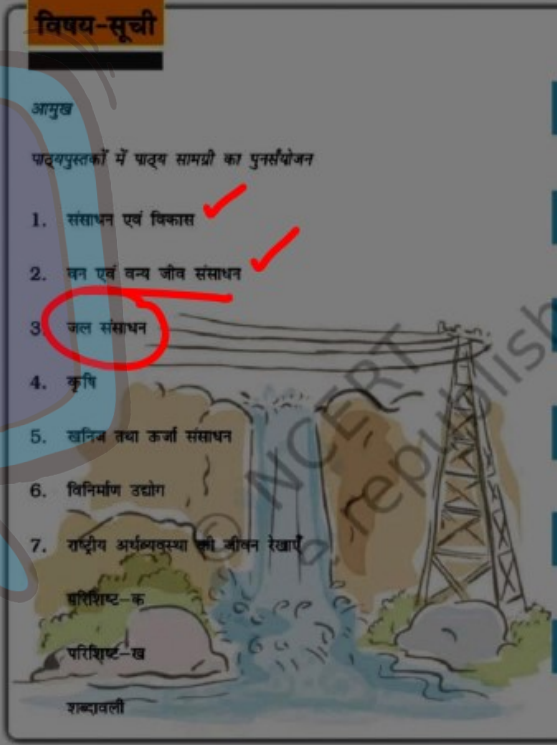
सामाजिक विज्ञान

समकालीन भारत -2

कक्षा 10 के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक

विषय-सूची

	आमुख	iii
	पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	v
1.	संसाधन एवं विकास	1
2.	वन एवं वन्य जीव संसाधन	13
3.	जल संसाधन	19
4.	कृषि	30
5.	खनिज तथा ऊर्जा संसाधन	42
6.	विनिर्माण उद्योग	58
7.	राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ	72
	परिशिष्ट–क	86
	परिशिष्ट–ख	87
	शब्दावली	88

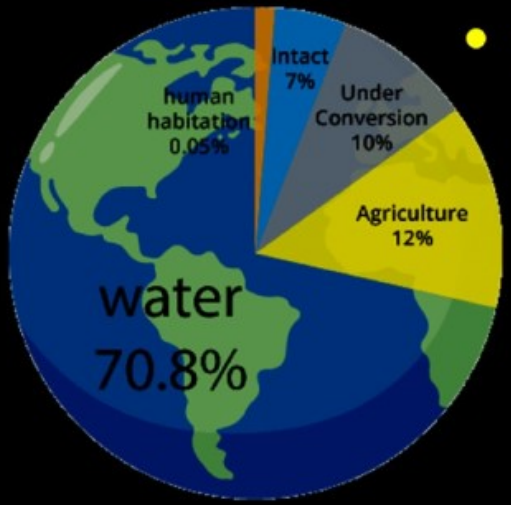


© NCERT not to be republished

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



- तीन-चौथाई धरातल जल से ढका हुआ है, परंतु प्रयोग में लाने योग्य अलवणीय-जल का अनुपात बहुत कम है। (71%, 29%)

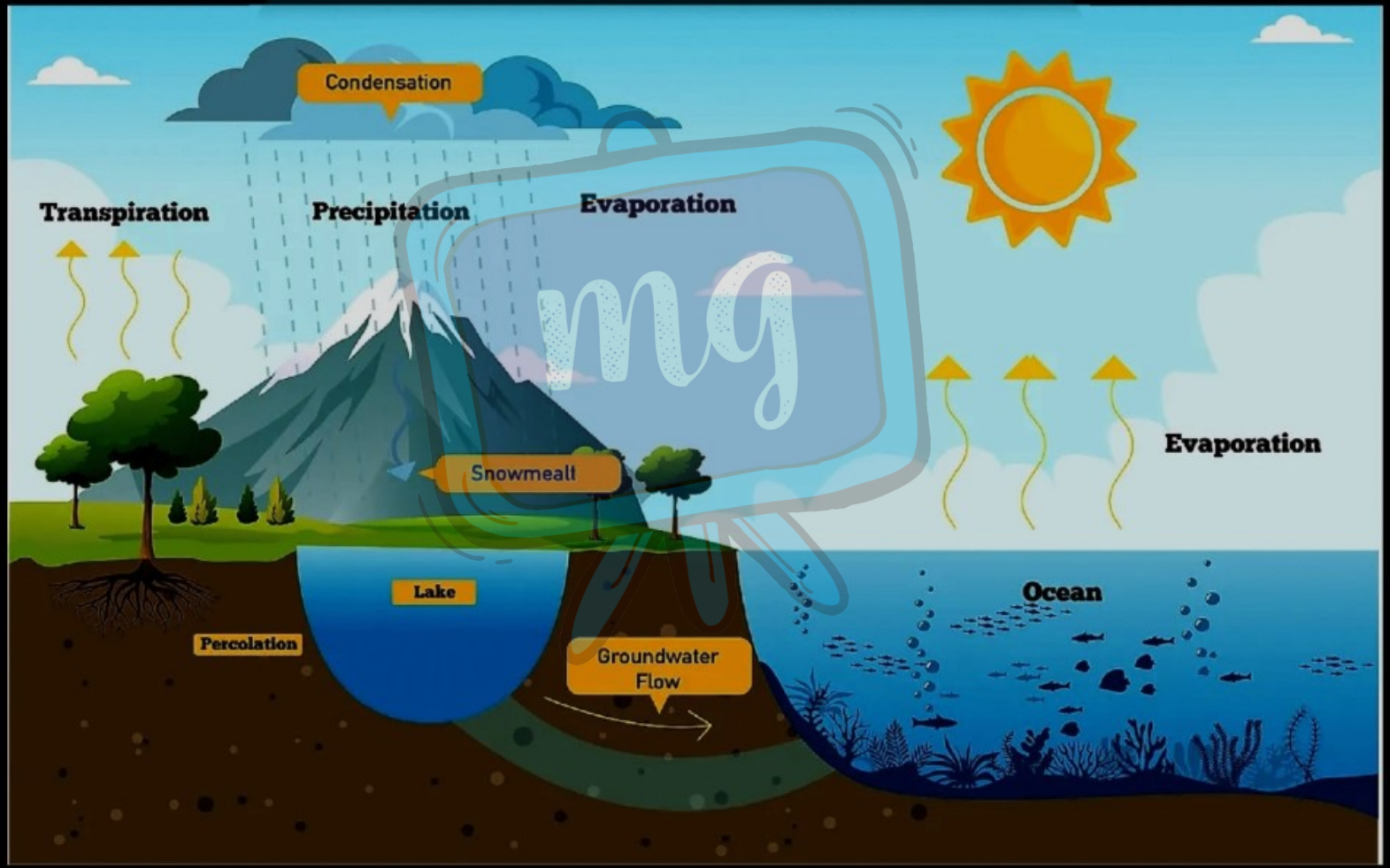
अलवणीय-जल हमें सतही-अपवाह और भौमजल स्त्रोत से प्राप्त होता है, जिनका लगातार नवीकरण और पुनर्भरण जलीय चक्र द्वारा होता रहता है।

- सारा जल जलीय-चक्र में गतिशील रहता है जिससे जल नवीकरण सुनिश्चित होता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



जल दुर्लभता और जल संरक्षण-प्रबंधन की आवश्यकता

- जल के विशाल भंडार और इसके नवीकरण होते हुए भी हमें जल दुर्लभता का सामना करना पड़ सकता है।
- जैसे ही हम जल की कमी की बात करते हैं तो हमें तत्काल ही कम वर्षा वाले क्षेत्रों या सूखाग्रस्त इलाकों का ध्यान आता है।
- हमारे मानस पटल पर तुरंत राजस्थान के मरुस्थल और जल से भरे मटके संतुलित करती हुई और जल भरने के लिए लंबा रास्ता तय करती पनिहारिनों के चित्र चित्रित हो जाते हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



जल की कमी/ जल दुर्लभता के प्रमुख कारण

- अतिशोषण और अत्यधिक प्रयोग
- समाज के विभिन्न वर्गों में जल का असमान वितरण
- अत्यधिक जनसंख्या /बढ़ती जनसंख्या → जल की बढ़ती माँग
- असमान वितरण (वर्षा में वार्षिक और मौसमी परिवर्तन के कारण)
- जल की खराब गुणवत्ता
- शहरों में जल संसाधनों का अति शोषण

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल का सबसे ज्यादा उपयोग सिंचित कृषि में होता है।

क्यों ?

अधिक जनसंख्या → अधिक अनाज उगाना → अधिक जल

अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिए जल संसाधनों का अतिशोषण करके सिंचित क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है और शुष्क ऋतु में भी खेती की जा सकती है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



बहुत से किसानों के खेतों पर अपने निजी कुएँ और नलकूप हैं जिनसे सिंचाई करके वे उत्पादन बढ़ा रहे हैं।

प्रभाव

इसके कारण भौम जलस्तर नीचे गिर सकता है
लोगों के लिए जल की उपलब्धता में कमी हो सकती है।
भोजन सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

हल

शुष्क-कृषि तकनीकों का विकास
सूखा-प्रतिरोधी फसलों का विकास

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

स्वतंत्रता के बाद भारत में तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण हुआ

उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या → अलवणीय जल संसाधनों पर दबाव

उद्योगों को ऊर्जा की भी आवश्यकता होती है और इसकी काफी हद तक पूर्ति जल विद्युत से होती है।
(वर्तमान में भारत में कुल विद्युत का लगभग 22% भाग जल विद्युत से प्राप्त होता है)

शहरों की बढ़ती संख्या, बढ़ती जनसंख्या तथा शहरी जीवन शैली के कारण जल एवं ऊर्जा की आवश्यकता में बढ़ोतरी हुई है जिससे समस्याएँ और भी गहरी हुई हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जल प्रदूषण

- घरेलू अपशिष्ट
- औद्योगिक अपशिष्ट,
- कृषि में प्रयुक्त उर्वरक एवं कीटनाशक
- अन्य रसायन

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल जीवन मिशन (J.J.M.)

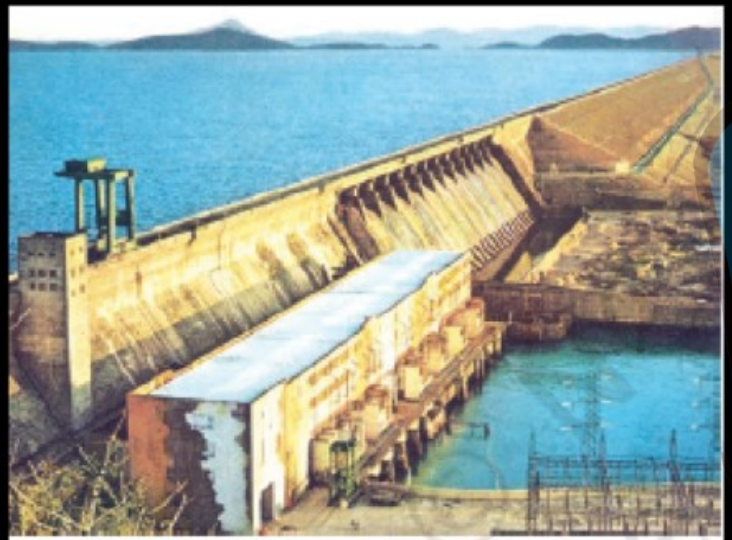
- भारत सरकार द्वारा
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और उनके जीवनयापन को आसान बनाने के लिए
- प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नियमित रुप से प्रति व्यक्ति 55 लीटर पीने- योग्य पानी की आपूर्ति



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



चित्र 3.2 – हीराकुड बाँध

बहु उद्देशीय नदी परियोजनाएं

बांध

हमने प्राचीन काल से सिंचाई के लिए पत्थरों और मलबे से बाँध, जलाशय अथवा झीलों के तटबंध और नहरों जैसी उत्कृष्ट जलीय कृतियाँ बनाई हैं।

हमने यह परिपाटी आधुनिक भारत में भी जारी रखी है और अधिकतर नदियों के बेसिनों में बाँध बनाए हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

बाँध

परम्परागत बाँध, नदियों और वर्षा जल को इकट्ठा करके बाद में उसे खेतों की सिंचाई के लिए उपलब्ध करवाते थे।

आज कल बाँध सिर्फ सिंचाई के लिए नहीं बनाए जाते अपितु उनका उद्देश्य विद्युत उत्पादन, घरेलू और औद्योगिक उपयोग, जल आपूर्ति, बाढ़ नियंत्रण, मनोरंजन, आंतरिक नौचालन और मछली पालन भी है।

इसलिए बाँधों को बहुउद्देशीय परियोजनाएँ भी कहा जाता है

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

जवाहरलाल नेहरू गर्व से बाँधों को 'आधुनिक भारत के मंदिर' कहा करते थे।

उनका मानना था कि इन परियोजनाओं के चलते कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण और नगरीय अर्थव्यवस्था समन्वित रुप से विकास करेगी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



मुख्य नदियाँ और बाँध

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

भाखड़ा नांगल परियोजना (पंजाब)

सतलुज-ब्यास बेसिन में जल विद्युत उत्पादन और सिंचाई दोनों के काम में आती है।

हीराकुड परियोजना — उड़ीसा

महानदी बेसिन

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

बाँधों का वर्गीकरण

उनकी संरचना, उद्देश्य या ऊँचाई के अनुसार किया जाता है ।

संरचना और उनमें प्रयुक्त पदार्थों के आधार पर बाँधों को लकड़ी के बाँध, तटबंध बाँध या पक्का बाँध आदि में बाँटा जा सकता है।

ऊँचाई के अनुसार बाँधों को बड़े बाँध और मुख्य बाँध या नीचे बाँध, मध्यम बाँध और उच्च बाँधों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समस्या

नदियों पर बाँध बनाने और उनका बहाव नियंत्रित करने से उनका प्राकृतिक बहाव अवरुद्ध होता है

बाँध नदियों को टुकड़ों में बाँट देते हैं जिससे विशेषकर अंडे देने की ऋतु में जलीय जीवों का नदियों में स्थानांतरण अवरुद्ध हो जाता है।

बाढ़ के मैदान में बनाए जाने वाले जलाशयों द्वारा वहाँ मौजूद वनस्पति और मिट्टियाँ जल में डूब जाती हैं जो कालांतर में अपघटित हो जाती है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

बहुउद्देशीय परियोजनाएँ और बड़े बाँध नए पर्यावरणीय आंदोलनों जैसे – 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' और 'टिहरी बाँध आंदोलन' के कारण भी बन गए हैं। इन परियोजनाओं का विरोध मुख्य रूप से स्थानीय समुदायों के वृहद स्तर पर विस्थापन के कारण है।

आमतौर पर स्थानीय लोगों को उनकी जमीन, आजीविका और संसाधनों से लगाव एवं नियंत्रण देश की बेहतरी के लिए कुर्बान करना पड़ता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

सिंचाई ने कई क्षेत्रों में फसल प्रारूप परिवर्तित कर दिया है जहाँ किसान जल-गहन और वाणिज्य फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

इससे मृदाओं के लवणीकरण जैसे गंभीर पारिस्थितिकीय परिणाम हो सकते हैं।

बहुद्देशीय परियोजनाओं के लागत और लाभ के बँटवारे को लेकर अंतर्राज्यीय झगड़े आम होते जा रहे हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

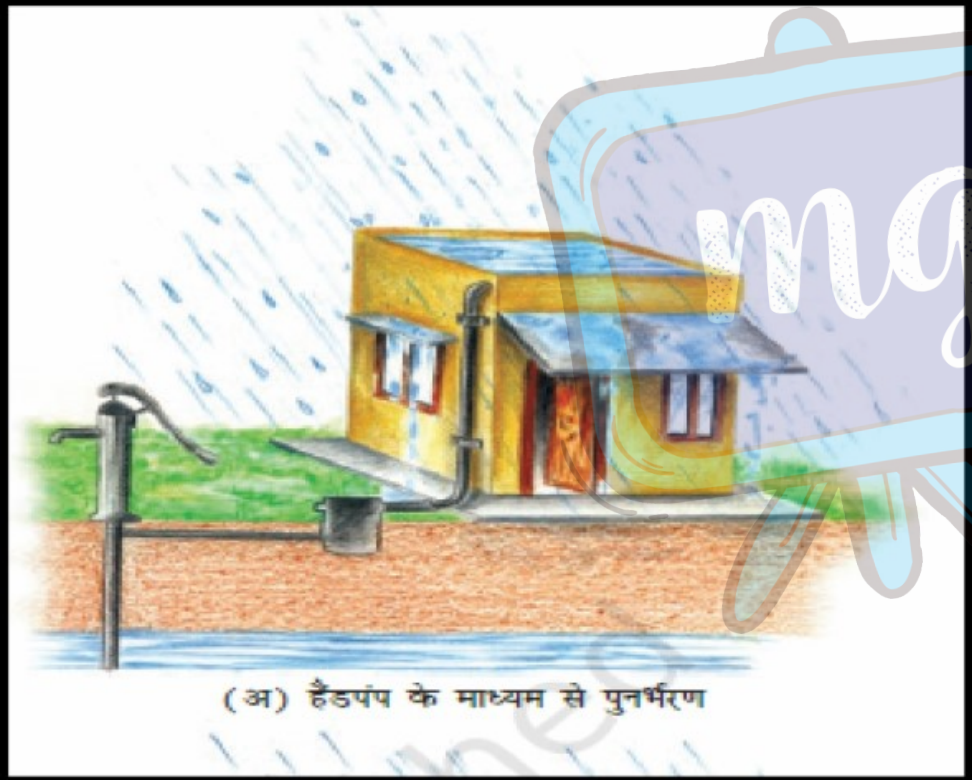
यह भी माना जाता है कि बहुउद्देशीय योजनाओं के कारण भूकंप आने की संभावना भी बढ़ जाती है

अत्यधिक जल के उपयोग से जल-जनित बीमारियाँ, फसलों में कीटाणु-जनित बीमारियाँ और प्रदूषण फैलते हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

वर्षा जल संग्रहण



(अ) हैंडपंप के माध्यम से पुनर्भरण



(ब) बेकार पड़े कुएँ के माध्यम से पुनर्भरण

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

वर्षा जल संग्रहण

बहुत से लोगों का मानना है कि बहुउद्देशीय परियोजनाओं के अलाभप्रद असर और उन पर उठे विवादों के चलते वर्षाजल संग्रहण तंत्र सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक तौर पर व्यवहार्थ विकल्प हो सकते हैं।

प्राचीन भारत में उत्कृष्ट जलीय निर्माणों के साथ-साथ जल संग्रहण ढाँचे भी पाए जाते थे।

लोगों को वर्षा पद्धति और मृदा के गुणों के बारे में गहरा ज्ञान था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

उन्होंने स्थानीय पारिस्थितिकीय परिस्थितियों और उनकी जल आवश्यकतानुसार वर्षाजल, भौमजल, नदी जल और बाढ़ जल संग्रहण के अनेक तरीके विकसित कर लिए थे।

पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों ने नदी की धारा का रास्ता बदलकर खेतों में सिंचाई के लिए 'गुल'/'कुल' (पश्चिमी हिमालय) जैसी वाहिकाएँ बनाई हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

पश्चिमी भारत (विशेषकर राजस्थान) में पीने का जल एकत्रित करने के लिए 'छत वर्षा जल संग्रहण' का तरीका आम था।

पश्चिम बंगाल में बाढ़ के मैदान में लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए बाढ़ जल वाहिकाएँ बनाते थे।

शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में खेतों में वर्षा जल एकत्रित करने के लिए गड्ढे बनाए जाते थे ताकि मृदा को सिंचित किया जा सके और संरक्षित जल को खेती के लिए उपयोग में लाया जा सके। **(जैसलमेर में 'खादीन' और अन्य क्षेत्रों में 'जोहड़')**

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



राजस्थान के अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों (विशेषकर बीकानेर, फलोदी और बाड़मेर) में लगभग हर घर में पीने का पानी संग्रहित करने के लिए भूमिगत टैंक **('टाँका')** हुआ करते थे।

टाँका में वर्षा जल अगली वर्षा ऋतु तक संग्रहित किया जा सकता है।

जिससे ये ग्रीष्म ऋतु में पीने का जल उपलब्ध करवाने वाला स्रोत बनता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

कुछ घरों में तो टाँको के साथ भूमिगत कमरे भी बनाए जाते हैं क्योंकि ये टांके इन कमरों को भी ठंडा रखता था जिससे ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से राहत मिलती है।

वर्षा-जल अथवा 'पालर पानी' प्राकृतिक जल का शुद्धतम रूप समझा जाता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

रोचक तथ्य

- मेघालय की राजधानी शिलांग में छत वर्षा-जल संग्रहण प्रचलित है।

यह रोचक इसलिए है क्योंकि चेरापूँजी और मॉसिनराम में विश्व की सबसे अधिक वर्षा होती है और फिर भी यह शहर पीने के जल की कमी की गंभीर समस्या का सामना करता है।

शहर के लगभग हर घर में छत वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

रोचक तथ्य

आज पश्चिमी राजस्थान में छत वर्षा-जल संग्रहण की रीति इंदिरा गांधी नहर से उपलब्ध बारहमासी पेयजल के कारण कम होती जा रही है।

हालाँकि कुछ घरों में टाँकों की सुविधा अभी भी है क्योंकि उन्हें नल के पानी का स्वाद पसन्द नहीं है।

सौभाग्य से आज भी भारत के कई ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जल संरक्षण और संग्रहण का यह तरीका प्रयोग में लाया जा रहा है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

रोचक तथ्य

तमिलनाडु एक ऐसा राज्य है जहाँ पूरे राज्य में हर घर में छत वर्षाजल संग्रहण ढाँचों का बनाना आवश्यक कर दिया गया है।

इस संदर्भ में दोषी व्यक्तियों पर कानूनी कार्यवाही हो सकती है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन



बाँस ड्रिप सिंचाई प्रणाली

मेघालय में नदियों व झरनों के जल को बाँस द्वारा बने पाइप द्वारा एकत्रित करके 200 वर्ष पुरानी विधि प्रचलित है। लगभग 18 से 20 लीटर सिंचाई पानी बाँस पाइप में आ जाता है तथा उसे सैकड़ों मीटर की दूरी तक ले जाया जाता है। अंत में पानी का बहाव 20 से 80 बूँद प्रति मिनट तक घटाकर पौधे पर छोड़ दिया जाता है।



चित्र 1 – पहाड़ी शिखरों पर सदानीरा झरनों की दिशा परिवर्तित करने के लिए बाँस के पाइपों का उपयोग किया जाता है। इन पाइपों के माध्यम से गुरुत्वाकर्षण द्वारा जल पहाड़ के निचले स्थानों तक पहुँचाया जाता है।





चित्र 2 तथा 3 – बाँस से निर्मित चैनल से पौधे के स्थान तक जल का बहाव परिवर्तित किया जाता है। पौधे तक बाँस पाइप से बनाई व बिछाई गई विभिन्न जल शाखाओं में जल वितरित किया जाता है। पाइपों में जल प्रवाह इनकी स्थितियों में परिवर्तन करके नियंत्रित किया जाता है।



चित्र 4 – यदि पाइपों को सड़क पार ले जाना हो तो उन्हें भूमि पर ऊँचाई से ले जाया जाता है।





चित्र 5 व 6 – संकुचित किये हुए चैनल सेक्शन और पथांतरण इकाई जल सिंचाई के अंतिम चरण में प्रयुक्त की जाती है। अंतिम चैनल सेक्शन से पौधे की जड़ों के निकट जल गिराया जाता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

Q.1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) नीचे दी गई सूचना के आधार पर स्थितियों को 'जल की कमी से प्रभावित' या 'जल की कमी से अप्रभावित' में वर्गीकृत कीजिए।

(क) अधिक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र

(ख) अधिक वर्षा और अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र

(ग) अधिक वर्षा वाले परंतु अत्यधिक प्रदूषित जल क्षेत्र

(घ) कम वर्षा और कम जनसंख्या वाले क्षेत्र

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

(ii) निम्नलिखित में से कौन-सा वक्तव्य बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं के पक्ष में दिया गया तर्क नहीं है?

(क) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ उन क्षेत्रों में जल लाती है जहाँ जल की कमी होती है।

(ख) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ जल बहाव की नियंत्रित करके बाढ़ पर काबू पाती है।

(ग) बहुउद्देशीय परियोजनाओं से बृहत स्तर पर विस्थापन होता है और आजीविका खत्म होती है।

(घ) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ हमारे उद्योग और घरों के लिए विद्युत पैदा करती हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए।

(i) व्याख्या करें कि जल किस प्रकार नवीकरण योग्य संसाधन है ?

उत्तर:- जल का नवीकरण प्राकृतिक रूप से जलचक्र द्वारा होता रहता है। उपयोग किए जाने वाले सभी पानी समुद्र में समाप्त हो जाते हैं। वहां से यह जल वाष्प के रूप में हाइड्रोलॉजिकल चक्र में प्रवेश करता है। जब वर्षा होती है तो इस चक्र द्वारा मीठे पानी का नवीनीकरण किया जाता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) जल दुर्लभता क्या है और इसके मुख्य कारण क्या है ?

उत्तर:- मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जल की कमी जल दुर्लभता कहलाती है।

इसके प्रमुख कारण है –

(क) समाज में जल का असमान वितरण

(ख) अत्यधिक और निरंतर बढती जनसंख्या

(ग) उपलब्ध जल का अति - उपयोग

(घ) जल प्रदूषण

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लाभ | हानि

(iii) बहुउद्देशीय परियोजनाओं से होने वाले लाभ और हानियों की तुलना करें ?

उत्तर:- लाभ :-

(क) बाढ़ पर रोक लगाने में सहायक है।

(ख) बिजली उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।

(ग) मछली पालन में सहायक है।

(घ) पर्यटन को बढ़ावा मिलाता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हानि :-

(क) नदियो का बहाव बाधित होता है । परिणामस्वरुप स्थानीय वनस्पतियों और जीवों को नुकसान होता है

(ख) जल प्रदूषण जैसी कठिनाइयाँ पैदा होती है।

(ग) कई गाँव जलमग्न हो जाते हैं और लोग अपनी आजीविका खो देते हैं

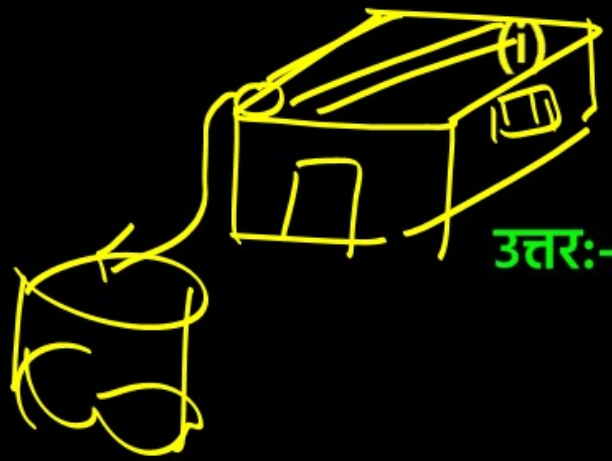
SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए।

राजस्थान के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वर्षा-जल संग्रहण किस प्रकार किया जाता है ? व्याख्या कीजिए।

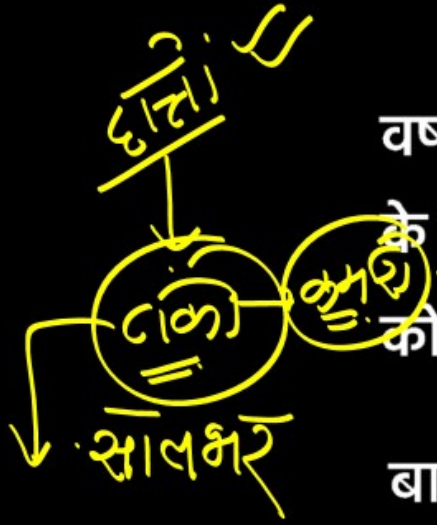


उत्तर:- राजस्थान के अर्ध शुष्क क्षेत्रों (बीकानेर, फलोदी, बाड़मेर आदि) में पीने के पानी को इकट्ठा करने हेतु भूमिगत टैंक अथवा टंका प्रयोग किया जाता है। यह मुख्य घर या आँगन में बनाया जाता है। ये टैंक घर की ढलवाँ छतों के माध्यम से पाइप के जारी जुड़े होते है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्षा का जल इन पाइपों से होकर टैंक तक पहुँचता है। पहली वर्षा के जल का संग्रह नहीं किया जाता, बल्कि इसे टैंक और पाइप आदि को साफ़ करने में उपयोग किया जाता है।

बाद की बारिश का पानी एकत्र किया जाता है। इस पानी का उपयोग अगली बारिश के मौसम तक किया जाता है,और अन्य स्रोतों के सूख जाने के बाद भी यह पानी का एक विश्वसनीय स्रोत है। टैंक घरों को ठंडा करने में भी मदद करते हैं क्योंकि उनके आसपास बने कमरों में चालन के कारण आमतौर पर कम तापमान होता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) परंपरागत वर्षा जल संग्रहण की पद्धतियों को आधुनिक काल में अपना करा जल संरक्षण एवं भंडारण किस प्रकार किया जा रहा है।

उत्तर:- वर्षा जल संग्रहण पद्धति , वर्षा के जल को पीने के लिए एकत्रित करने की एक विधि है। ज्यादा आबादी वाले नगरों , जहाँ पीने योग्य पानी की कमी होती है , ये पद्धतीन अपनाई जा सकती है इसका प्रारुप इस प्रकार है -

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

जल संसाधन

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(क). पानी को साफ़ करनें के लिए एक तीन-स्तरीय छनन प्रक्रिया का इस्तेमाल किया जा सकता है

(ख). पाइप की मदद से जल को टैंक तक ले जाया जाता है।

(ग). कुँए के जल से पानी का पुनर्भरण किया जा सकता है।

(घ). हौज अथवा टैंक के अलावा पानी को कुएँ आदि तक ले जाया जा सकता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

